प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 9 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

जब से संसार में साक्षरता का विकास हुआ है तब से पुस्तकालय का प्रचार और विकास हुआ है। भारत में साक्षरता–विकास के साथ ही पुस्तकालयों का भी विकास हुआ है। पुस्तकालय स्कूलों तथा कॉलेजों में होते हैं और विद्यार्थी उन पुस्तकालयों का समुचित प्रयोग करते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ सरकारी पुस्तकालय हैं जिन्हें सरकार जनता के लिए खोलती है। कुछ सार्वजनिक पुस्तकालय होते हैं जो निजी संस्थानों द्वारा खोले जाते हैं। आजकल सरकार ने चलते–फिरते पुस्तकालय भी खोल दिए हैं जो शहरों व गाँवों में, दूर–दूर के स्थानों पर जनता के पास पहुँच जाते हैं। आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तकों के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता है। जैसे नए लेखकों से मुलाकात करवाना, कहानी सुनाना आदि। इतना ही नहीं, जब पुस्तकें पुरानी हो जाती हैं, यानी जनता के प्रयोग के कारण फटने लगती हैं तब उन्हें सस्ते दामों में पुस्तक प्रेमियों को बेच भी दिया जाता है।

1. सरकारी पुस्तकालय सरकार किसके लिए खोलती है? 2

उत्तर : सरकारी पुस्तकालय सरकार जनता के लिए खोलती है।

2. कौन से पुस्तकालय हैं, जो शहर व गाँव सब जगह पहुँच जाते हैं? 2

उत्तर : आजकल सरकार ने चलते–फिरते पुस्तकालय भी खोल दिए हैं, जो शहरों व गाँवों में दूर–दूर के स्थानों पर जनता के पास पहुँच जाते हैं।

3. आधुनिक पुस्तकालयों में किन गतिविधियों का आयोजन किया जाता है और क्यों? 2

उत्तर : आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तकों के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जैसे–नए लेखकों से मुलाकात करवाना, कहानी सुनाना आदि।

4. पुस्तकालय में जब पुस्तकें पुरानी होने के कारण फटने लगती हैं, तो उनका क्या किया जाता है? 2

उत्तर : पुस्तकालय में जब पुस्तकें पुरानी हो जाती हैं यानी जनता के द्वारा प्रयोग के कारण फट जाती हैं तब उन्हें सस्ते दामों में पुस्तक प्रेमियों को बेच दिया जाता है।

5. भारत में साक्षरता–विकास के साथ ही किसका विकास हुआ है? 1

उत्तर : भारत में साक्षरता–विकास के साथ ही पुस्तकालय का भी विकास हुआ है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : पुस्तकालय का महत्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. बारिश हो रही थी, इसलिए कपड़े भीग गए। (रचना के आधार पर वाक्य–भेद लिखिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

2. सफेद कमीज वाले बच्चे को बुलाओ। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : उस बच्चे को बुलाओ, जिसने सफेद कमीज पहनी है।

3. अमित ने बुलाया पर सुमित नहीं आया। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : अमित के बुलाने पर भी सुमित नहीं आयाँ

4. जो छात्र लापरवाह था, वह छत से गिर गया। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. पवन ने आम खाए।(कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : पवन द्वारा आम खाए गए।

2. रवि द्वारा चित्र बनाया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : रवि ने चित्र बनाया।

3. सरिता पत्र लिख चुकी है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : सरिता द्वारा पत्र लिखा जा चुका है।

4. बच्चा नहीं सोता। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : बच्चे से सोया नहीं जाता।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. अभी **मैं** कुछ नहीं कहूँगा।

उत्तर : पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक (परसर्ग रहित), **कहूँगा** क्रिया का कर्ता।

2. अजय शाम को घर **पहुँचा**।

उत्तर : अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, इसका कर्ता **अजय** है।

3. सुनंदा गोदान **पढ़ रही थी**।

उत्तर : सकर्मक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, अन्य पुरुष, इसकी कर्ता **सुनंदा** और इसका कर्म **गोदान** है।

4. गुलाब पर **अनेक** फूल खिले हैं।

उत्तर : अनिश्चित संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग-स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त हो सकता है, इसका विशेष्य **फूल** है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. भक्ति और वीर रस का स्थाई भाव लिखिए।

उत्तर : भक्ति रस का स्थाई भाव **भगवद्रति** और वीर रस का स्थाई भाव **उत्साह** है।

2. निम्नलिखित काव्यांश में निहित रस लिखिए।

रो-रोकर सिसक-सिसककर,
मैं कहता करूण कहानी।
तुम सुमन नोंचते-सुनते,
करते जानी-अनजानी।।

उत्तर : काव्यांश में **वियोग श्रृंगार रस** है।

3. जो भाव स्थाई भाव को जाग्रत करते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर : विभाव।

4. करूण रस का स्थाई भाव लिखिए।

उत्तर : शोक।

5. निर्वेद किस रस का स्थाई भाव है?

उत्तर : शांत रस।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत **पड़ोस-कल्चर** से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरम्भिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं हैं। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।

1. उस जमाने में घरों की क्या विशेषता थी? 2

उत्तर : उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थी। यानी पड़ोस के लोगों के साथ इतना अपनापन और प्यार होता था कि आस-पडोस के घर भी अपने जैसे ही मालूम होते थे। मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर पाबंदी नहीं थी और कुछ घर परिवार का हिस्सा होते थे।

2. अपनी जिंदगी खुद जीने के आधुनिक दबाव ने महानगरों के लोगों को किस तरह से प्रभावित किया है? 2

उत्तर : अपनी जिंदगी खुद जीने के आधुनिक दबाव ने महान-गरों के फ्लैट में रहने वालों को परम्परागत पड़ोस-कल्चर से जुदा कर दिया है। पहले कुछ पड़ोसियों के घर भी अपने जैसे घर मालूम होते थे, आज वह बात नहीं रह गई है। आज के महानगरीय जीवन ने हमें संकुचित असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

3. लेखिका की आरंभिक कहानियों के पात्र कौन रहे हैं? 2

उत्तर : लेखिका की लगभग एक दर्जन आधुनिक कहानियों के पात्र उस मोहल्ले के रहे हैं जहाँ उन्होंने अपनी किशोरावस्था गुजार कर युवावस्था का आरंभ किया था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. **नेताजी का चश्मा** पाठ में हालदार साहब के किस रूप को प्रकट किया गया? स्पष्ट करें?

उत्तर : **नेताजी का चश्मा** कहानी में हालदार साहब को एक देशभक्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक साधारण से कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर नेता जी की मूर्ति देखकर वे खुश हो जाते हैं तथा वहाँ ऐसी मूर्ति लगाए जाने के प्रयास को सफल और सराहनीय कहते हैं। फौजी वर्दी में नेता जी की मूर्ति देखते ही उन्हें **दिल्ली चलो** तथा **तुम मुझे खून दो.....** आदि देशभक्ति भरे नारे याद आने लगते हैं। नेताजी के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा है। कैप्टन द्वारा नेताजी की आँखों पर चश्मा लगाया जाना उन्हें प्रभावित करता है। उसकी मृत्यु पर वे दुखी हो जाते हैं, उन्हें लगता है अब नेताजी की आँखों पर कोई चश्मा नहीं लगाएगा।

2. बालगोबिन भगत का बेटा कैसा था? भगत जी के अपने बेटे के बारे में क्या विचार थे?

उत्तर : बालगोबिन भगत का एक ही बेटा था। वह कुछ सुस्त और बोदा–सा था। इसी कारण भगत जी उससे कुछ अधिक ही स्नेह करते थे। उसका बहुत ध्यान रखते थे। उनका मानना था कि ऐसे बच्चों को अधिक प्यार और स्नेह देना चाहिए। हमें इन पर अधिक ध्यान देना चाहिए। ये निगरानी और प्यार के अधिक हकदार होते हैं।

3. नवाब साहब द्वारा खीरे खाने की तहजीब को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : नवाब साहब ने नवाबी शान के कारण कटे हुए तथा नमक–मिर्च लगे हुए खीरे को ललचाई हुई आँखों से देखा, फिर उसकी एक–एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए, उन्हें सूँघा। स्वाद के आनंद से उनकी आँखें बंद हो गई और मुँह में पानी भर आया। मुँह में भर आए पानी को गले से नीचे उतारकर उन्होंने दीर्घ निःश्वास लेकर फाँक को खिड़की से नीचे फेंक दिया। ऐसी सभी फाँकों को नीचे फेंककर उन्होंने तौलिए से हाथ पोंछ लिए।

4. लेखक ने फादर बुल्के को मानवीय करूणा की दिव्य चमक क्यों कहा है?

उत्तर : लेखक ने फादर बुल्के को मानवीय करूणा की दिव्य चमक कहा है क्योंकि उनके हृदय में प्रत्येक दीन–दुखी के लिए करूणा भरी हुई थी। वे सभी पर अपना स्नेह लुटाते थे। दूसरों के दुखों में शामिल होते थे। अपनी करूणा से लोगों को धैर्य बँधाते थे। वे रिश्तों को जीवन भर निभाते थे। किसी पर क्रोध नहीं करते थे। करूणा भाव उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग था।

5. हालदार साहब ने ड्राइवर को चौराहे पर न रुकने का निर्देश क्यों दिया था?

उत्तर : हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले से ही सूचित कर दिया था कि आज चौराहे पर रुकना नहीं। आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे। वास्तविकता यह थी कि हालदार साहब यह सोचकर चौराहे पर रुकना नहीं चाहते थे कि वहाँ सुभाष की मूर्ति तो जरूर होगी लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। यह बात उन्हें आहत कर रही थी।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 6

तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि–धूसर तुम्हारे ये गात...
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल?

1. कवि किसकी और कैसी मुस्कान का वर्णन कर रहा है और उससे क्यों प्रभावित है? 2

उत्तर : कवि अपने शिशुपुत्र की भोली और मनमोहक मुस्कान का वर्णन कर रहा है। वे उससे इसलिए प्रभावित हो रहा है क्योंकि वह मुस्कान भोली स्वाभाविक और सहज ही आकर्षित करने वाली है। निर्जीव में भी जान डाल देने वाली है। मुस्कुराते समय जब उसके दाँत दिखते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो उनकी झोंपड़ी में कमल खिल रहे हैं। उसे देखकर वे बहुत आनंदित होते हैं।

2. कवि शिशु की ओर देखकर क्या कल्पना करते हैं? 2

उत्तर : कवि शिशु को देखकर कल्पना करते हैं कि मानो कमल का फूल तालाब छोड़कर उनकी झोंपड़ी में खिल गया है अर्थात् शिशु के आ जाने से उनकी झोंपड़ी में आनंद और प्रसन्नता छा गई है।

3. कवि ने बाँस, बबूल किसे कहा है और क्यों? 2

उत्तर : कवि ने बाँस और बबूल स्वयं को कहा है। कवि बहुत दिनों बाद अपने पुत्र से मिल रहे थे। कवि का मन बाँस और बबूल की भाँति नीरस, शुष्क और ठूँठ जैसा हो गया था।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती है?

उत्तर : सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तो यह है कि श्रीकृष्ण वृंदावन लौटने की बात कहकर भी वापस नहीं आए, बल्कि उन्होंने भोली–भाली गोपियों को योग–साधना का पाठ पढ़ाने के लिए उद्धव को भेज दिया। अब उन्होंने कूटनीति भी पढ़ ली और वे पहले से भी अधिक चतुर बन गए। वे अपना राजधर्म भी नहीं निभाते। भोली–भाली गोपियों को सताना कहाँ का राजधर्म है। वे चित्तचोर हैं। वे अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं करते हैं। अतः गोपियाँ अपने मन, जिसे श्रीकृष्ण ने चुराया है, वापस लेने की बात कहती हैं।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी।

अहो मुनीसु महाभट मानी।।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू।

चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

उत्तर : लक्ष्मण ने परशुराम के स्वभाव को समझकर तपस्या के कारण उनमें जगे अहंकार को दूर करने के लिए व्यंग्य का सह–ारा लिया। उन्होंने हंसकर मधुरवाणी में उन्हें ऋषिवर संबोधित किया और कहा कि वे तो जगत–विख्यात महान योद्धा हैं उन्हें बार–बार कुल्हाड़ी दिखाकर भयभीत क्यों कर रहे हैं। मानो वे फूँक मारकर पहाड़ रूपी लक्ष्मण को उड़ाने का महान काम कर रहे हैं। लक्ष्मण के इस व्यंग्य बाण ने वीरता के अहंकार में चूर परशुराम की क्रोधाग्नि में घी का काम किया और वे अधिक क्रुद्ध हो गए।

3. **अट नहीं रही** कविता के आधार पर फागुन के सौंदर्य का चित्रण कीजिए जिसके आधार पर उसे अन्य ऋतुओं से भिन्न समझा जाता है।

उत्तर : फागुन में वसंत ऋतु प्रकृति का शृंगार करती है। पतझड़ के बाद नए–नए, हरे, लाल आभायुक्त पत्तों से डालियाँ सज जाती हैं। जगह–जगह सुवासित रंग–बिरंगे पुष्पों की शोभा देखते ही बनती है। रंग–बिरंगी तितलियों का फूलों पर मंडराना और भंवरों का गुनगुनाना जैसे वातावरण को संगीतमय बना देता है। फलों के राजा आम के पेड़ों का बौरों से लद जाना, कोयल की मीठी तान में कुहकना, खेतों में तैयार खड़ी फसल का पकने के कारण सुनहरा होना, ये सब अन्य ऋतुओं में देखने को नहीं मिलता।

4. भाव स्पष्ट कीजिए–

प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चन्द्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

उत्तर : स्वयं को प्रभुत्व सम्पन्न करने अथवा स्वयं श्रेष्ठ बनने की प्रबल इच्छा रखते हुए संघर्ष करना एक मृगतृष्णा के समान है। जैसे रेगिस्तान में प्यासा हिरण सूरज की किरणों के रेत पर पड़ने से होने वाले परावर्तन को चमचमाती लहरों से युक्त बहता हुआ पानी समझकर सुधबुध खोकर उसे पाने के लिए दौड़ता है और वहाँ पहुँचकर कुछ नहीं पाता है, वैसे ही प्रभुत्व सम्पन्न बनकर जीवन के सच्चे सुख को ढूँढ़ने की लालसा मनुष्य को केवल अंधी दौड़ देती है, कोई सुख नहीं।

5. विश्वामित्र ने परशुराम को साधु की क्या विशेषता बताई है?

उत्तर : विश्वामित्र ने परशुराम को साधु की यह विशेषता बताई है कि साधु बालकों के गुणदोष पर ध्यान नहीं देते अर्थात् आप साधु (महात्मा) ठहरे और यह राजकुमार बालक है, आप इसे क्षमा करें।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है?

उत्तर : जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक यह संकेत करना चाहता है कि पहले भारतीय लोग अपने जीवन–मूल्यों को स्वयं निश्चित करते थे। वे अपने अनुभवों को ही अपना गुरू बनाते थे। वे किसी का अनुकरण नहीं करते थे। बड़े हों या छोटे, भारतीय सबसे अलग थे। उनकी अपनी पहचान हुआ करती थी, जिसे वे कभी नहीं खोते थे। प्राणों को न्योछावर करके भी वे अपनी गरिमा को बनाए रखते थे।

2. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक –सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर : भारत की संस्कृति अति प्राचीन है। लोंग स्टॉक में धर्म चक्र घुमाकर पापों के धुल जाने पर विश्वास किया जाता है। यह संस्कृति का ही एक हिस्सा है। भारत के लोगों में ऐसी ही आस्थाएँ, विश्वास और अंधविश्वास मिलते हैं। पाप–पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाओं की समानता के अनेक उदाहरण मिलते हैं। वैज्ञानिक उन्नति के बाद भी लेखिका को लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर ऐसा लगा कि भारत की आत्मा एक–सी है।

3. इस उपन्यास अंश में लगभग सौ वर्ष पहले की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह से परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर : भारत की ग्रामीण संस्कृति विज्ञान की उन्नति से प्रभावित हुई। महिलाओं, पुरूषों और बच्चों में साक्षरता बढ़ी है। लोग जागरूक बन रहे हैं। कृषि में हल, बैल के बजाय ट्रैक्टर, थ्रेशर एवं हार्वेस्टर का प्रयोग हो रहा है। बिजली आने से घरों में घरेलू इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रयोग किए जा रहे हैं। उसी तरह देसी दवाइयों के बजाय लोग प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से अंग्रेजी एवं आयुर्वेदिक दवाइयों से अपना इलाज करवा रहे हैं। बच्चे मिट्टी व लकड़ी के खिलौनों की जगह अब प्लास्टिक के आधुनिक खिलौनों से खेलने लगे हैं।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) विज्ञापनों का महत्व

संकेत–बिंदु : प्रस्तावना ✲ वर्तमान जीवन एवं विज्ञापन ✲ सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष ✲ उपसंहार

(2) मेक इन इंडिया

संकेत–बिंदु : भूमिका ✲ सोने की चिड़िया भारत की पृष्ठभूमि ✲ उद्यमी देश, पराधीनता काल में बदला परिदृश्य ✲ विकास में अग्रसर होने का संकल्प ✲ उपसंहार।

(3) समाचार पत्र

संकेत–बिंदु : समाचार पत्र का अर्थ ✲ समाचार पत्रों की दुनिया और इनके कार्यकलाप ✲ समाचार पत्र : अभिशाप या वरदान

उत्तर :

(1) विज्ञापनों का महत्व

संकेत–बिंदु : प्रस्तावना ✲ वर्तमान जीवन एवं विज्ञापन ✲ सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष ✲ उपसंहार

प्रस्तावना– आज के युग को यदि विज्ञापन युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिधर भी देखिए, उधर ही विज्ञापनों का जाल फैला हुआ है। अखबारों में, पत्रिकाओं में, रेडियो पर, टेलीविजन पर, फिल्मों में और यहाँ तक कि सार्वजनिक स्थलों से लेकर घरों की दीवारों पर, सड़कों के किनारे, मोड़ों और तिराहों–चौराहों पर लगे होर्डिंग आदि को देखकर लगता है कि हम हरदम विज्ञापनों की चीख–पुकार के बीच दौड़ रहे हैं।

विज्ञापन उत्पादों की बिक्री का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। हर उत्पादक चाहता है कि उसके उत्पाद की विशेषताओं की जानकारी जनता तक पहुँचे जिससे अधिक–से–अधिक लोग उसके ग्राहक बन सकें और वह अधिक–से–अधिक धन कमा सके।

वर्तमान जीवन एवं विज्ञापन– विज्ञान के नित नए आविष्कारों ने विज्ञापन की दुनिया में भी बड़ा परिवर्तन ला दिया है। बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ इस बात पर लाखों करोड़ों रूपये खर्च कर रही हैं कि कैसे अपने उत्पाद को जनता के दिमाग में बसाया जा सके। टेलीविजन पर कोई भी कार्यक्रम आ रहा हो, एक ही विज्ञापन की इतनी बार आवृत्ति की जाएगी कि दर्शक उससे अछूता न रह सके। मनोविज्ञान के जानकार मानते हैं कि बार–बार किसी चीज को दिखाने से उसकी याद बनी रहती है और जब याद बनी रहेगी तो कभी–न–कभी उसे खरीदने के लिए भी दिमाग जोर डालेगा।

सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष– यदि हम हर तरह के विज्ञापनों की बात करें तो इनके कुछ सकारात्मक पक्ष भी हैं। रोजगार और प्रशिक्षण, नामांकन आदि से संबंधित विज्ञापन युवाओं और विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक होते हैं। वर्गीकृत विज्ञापनों से आम जनता को लाभ होता है क्योंकि इनसे उन्हें रोजगार, विवाह, खरीद–बिक्री, किराए पर मकान आदि की जानकारी मिलती है। यह विज्ञापनों का ही प्रभाव है कि आम लोग अपनी जरूरत की प्रत्येक वस्तु के गुण–दोष से परिचित होते हैं और एक ही तरह की अनेक वस्तुओं में से अपनी पसंद की वस्तु का चयन करने में सक्षम होते हैं। विज्ञापनों का नकारात्मक पहलू यह है कि जितनी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं वह वस्तु उतनी उपयोगी होती नहीं है और इस आधार पर कई बार घटिया चीजें भी खूब बिकती हैं। कई प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन, तेल, साबुन, शैम्पू, क्रीम, मसाले और दैनिक उपभोग की वस्तुएँ चमकते विज्ञापनों के आधार पर बिक जाती हैं। विज्ञापनों की इसी उपयोगिता को देखकर कुछ लोगों ने इसे ठगी का आधार भी बना लिया है।

उपसंहार– वस्तुतः आज के युग में विज्ञापन जनता और उत्पाद को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण आधार है, किन्तु समाज हित के लिए इसके कुछ कड़े कानून होने चाहिए, जिससे जनता को कष्ट न हो।

(2) मेक इन इंडिया

संकेत–बिंदु : भूमिका ✲ सोने की चिड़िया भारत की पृष्ठभूमि ✲ उद्यमी देश, पराधीनता काल में बदला परिदृश्य ✲ विकास में अग्रसर होने का संकल्प ✲ उपसंहार।

भूमिका– मेक इन इंडिया भारत सरकार द्वारा चलाया गया वह कार्यक्रम है जो देश–विदेश के उद्यमियों को भारत में निर्माण के लिए प्रेरित करता है। यह भारत को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा करने का एक अच्छा प्रयास है।

सोने की चिड़ियाँ भारत की पृष्ठभूमि– प्राचीन समय में भारत एक समृद्ध देश था। यह सोने की चिड़ियाँ कहलाता था। यहाँ के लोग तरह–तरह की वस्तुओं का निर्माण करके विदेशों में निर्यात करते थे, जिससे व्यापारियों को पर्याप्त आय होती थी। भारत के उद्यमी सुदूर देशों में व्यापार करने जाते थे।

उद्यमी देश, पराधीनता काल में बदला परिदृश्य– यद्यपि भारत के लोग बहुत उद्यमी थे परन्तु पराधीनता काल में भारत के प्राचीन गौरव का ह्रास होने लगा। भारत की हस्तकला, शिल्प तथा व्यापार को पर्याप्त प्रोत्साहन न मिलने से यह देश शनैः–शनैः निर्धन होता चला गया। सदियों से चले आ रहे उद्योग–धन्धे चौपट होने लगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उद्योग और व्यापार के पुनरूत्थान की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। भारत के आधारभूत उद्योगों का विकास हुआ परन्तु यह उन्नति इतनी नहीं थी कि भारत दुनिया के विकसित देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके। अतः भारत में **मेक इन इंडिया** कार्यक्रम के अन्तर्गत रक्षा, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष,

खाद्य प्रसंस्करण, परिवहन, इलैक्ट्रोनिक्स, इंजीनियरिंग, विमानन आदि विभिन्न क्षेत्रों में विनिर्माण को प्रोत्साहित किया गया।

विकास में अग्रसर होने का संकल्प– आज **मेक इन इंडिया** कार्यक्रम का असर दिखाई देने लगा है। देशी–विदेशी उद्यमी भारत के बड़े पैमाने पर निवेश कर रहे हैं। इससे हमारा निर्यात बढ़ रहा है और रोजगार का सृजन हो रहा है। कीमती विदेशी मुद्रा की बचत भी हो रही है। भारत का व्यापार घाटा कम हो रहा है। हमारा देश एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में विश्व क्षितिज पर तेजी से उभर रहा है। भारत अब हथियारों तथा अन्य रक्षा उपकरणों का निर्यात भी कर रहा है। इससे विश्व में हमारी साख बढ़ रही है।

उपसंहार– मेक इन इंडिया अभियान को और भी गति देने की आवश्यकता है। यह देश की आर्थिक सम्पन्नता और निर्धन लोगों की निर्धनता को दूर करने का एक अच्छा प्रयास है।

(3) समाचार पत्र

संकेत–बिंदु : समाचार पत्र का अर्थ ❊ समाचार पत्रों की दुनिया और इनके कार्यकलाप ❊ समाचार पत्र : अभिशाप या वरदान

समाचार पत्र का अर्थ– समाचार पत्र का शाब्दिक अर्थ है– वह पत्र जिसमें समाचार हैं। समाचार किसी भी प्रकार का हो सकता है, जैसे देश–विदेश में घटने वाली घटनाओं के समाचार, खेल–कूद, शिक्षा, व्यापार तथा मनोरंजन के समाचार, धार्मिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों के समाचार आदि।

समाचार पत्रों की दुनिया और इनके कार्यकलाप– समाचार पत्र हमें केवल विभिन्न प्रकार के समाचार ही नहीं देंगे अपितु **जनमत**, **लोकवाणी** एवं संपादकीय पत्रों, लेखों एवं टिप्पणियों के माध्यम से जनता के मनोभावों को सही ढंग से प्रस्तुत करके सरकार को तदनुसार काम करने के लिए बाध्य करते हैं। साथ ही समाज में हो रहे उचित–अनुचित कार्यों की आलोचना करके सरकार एवं जनता दोनों को वे सतर्क करते हैं।

वस्तुतः समाचार–पत्र अत्यंत निष्ठा के साथ जनता की सेवा कर सकते हैं। स्वतंत्रता से पूर्व समाचार–पत्रों ने ही जन–जन के मन में राष्ट्रीय चेतना एवं आत्मसम्मान की भावना भरकर पीड़ित जनता को प्रबुद्ध कर दिया था। आज विज्ञान ने हमें दूरदर्शन, दूरभाष आदि अनेक वस्तुएँ दी हैं, किन्तु समाचार पत्रों का महत्व आज भी अक्षुण्ण है। न केवल शिक्षित वर्गों में अपितु राजनैतिक, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों के लोगों में भी समाचार पत्रों को पढ़ने की प्रबल चाह होती है।

समाचार पत्र अभिशाप या वरदान– समाचार–पत्र जब अपने क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र एवं जनता के कल्याण के लिए समाचारों का प्रकाशन करते हैं, तब वे मानव–जीवन के लिए वरदान स्वरूप हैं अन्यथा यदि वे संकुचित रखते हुए साम्प्रदायिक भावनाओं को बढ़ाने में सहयोग देते हैं एवं तथ्यों को तोड़–मरोड़कर पेश करते हैं, तब निस्संदेह वे अभिशाप हैं।

12. प्राचार्य को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखकर जुर्माना माफी का निवेदन कीजिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
केन्द्रीय विद्यालय,
रामकृष्णपुरम, सेक्टर–5,
आगरा।

विषय : जुर्माना माफी हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैंने एक माह पूर्व पुस्तकालय से महान व्यक्ति नामक एक पुस्तक अपने से निर्गत अर्थात् इशू करवाई थी। उस पुस्तक को एक सप्ताह बाद पुस्तकालय में लौटाना था। इस बीच में बीमार हो गया जिसके कारण मैं पुस्तक समय पर लौटाने में असमर्थ रहा। पुस्तकालयाध्यक्ष ने पुस्तक न लौटाने के कारण मुझे 100 रुपये जुर्माना देने का आदेश दिया है।

आपसे निवेदन है कि आप पुस्तकालयाध्यक्ष को मेरा जुर्माना माफ करने का आदेश दें। मैं भविष्य में कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा और समय पर पुस्तक लौटाने का प्रयास करूँगा।

आशा है, आप मेरे निवेदन पर अवश्य विचार करेंगे।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
आलोक
कक्षा– दसवी ब
अनुक्रमांक – XXX
दिनांक : 10 फरवरी, 2018

अथवा

मोटर साइकिल सुविधा के लिए है– तेज चलाने, करतब दिखाने के लिए नहीं– यह समझाते हुए अपने छोटे भाई को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

मैन मार्केट, सेक्टर–6
दिल्ली।
दिनांक : 27 सितम्बर, 2018

प्रिय अनुज
शुभाशीष।

कल मैंने मोटर साइकिल चलाते हुए तुम्हारा वीडियो देखा, तो हतप्रभ रह गया। तुम्हारे स्टंट अच्छे और आकर्षक थे परन्तु मैंने कई बार पढ़ा सुना है कि ऐसे करतब कभी–कभी जानलेवा साबित होते हैं। रफ्तार का अपना आनंद है परन्तु यही रफ्तार अकसर हमारी जान पर भारी पड़ जाती है।

मेरे भाई मोटर साइकिल हमारी सुविधा के लिए है। उसके माध्यम से हमारी यात्रा सुगम और जल्दी सम्पन्न हो जाती है

परन्तु जब हम बहुत तेज गति से, करतब दिखाते हुए मोटर साइकिल चलाते हैं तो दुर्घटना होने का खतरा बढ़ जाता है। वाहनों से होने वाली दुर्घटनाएँ बहुत जानलेवा सिद्ध होती हैं।

अतएव हमें सदैव संयमित, मर्यादित होकर वाहन चलाना चाहिए ताकि हम सुरक्षित रह सकें। एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान भी यही हैं कि वह ट्रैफिक नियमों का ध्यान रखते हुए सड़कों पर वाहन चलाए।

आशा है, तुम मेरी सलाह पर ध्यान दोगे और भविष्य में सावधान होकर बाइक चलाओगे। मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा अग्रज

अनिल

13. आप राज होटल के मैनेजर हैं। आपको हिंदी टाइपिस्ट की आवश्यकता है। इसके लिए विज्ञापन 25–30 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

आवश्यकता है

एक हिंदी टाइपिस्ट की

टाइप की गति 25 से 30 शब्द प्रति मिनट।

वेतन 12000 रु. प्रति माह।

अकाउंट्स का ज्ञान अपेक्षित।

संपर्क करें–

मैनेजर, होटल राज, रेलवे रोड, उदयपुर

मोबाइल नं: 9314422331

अथवा

किसी जूते का एक आकर्षक विज्ञापन 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

पाँवों को दे मख़मली अहसास,

चमक खास, दमक खास।

बाटा

की सैंडिलें व जूते

खिलाड़ियों एवं युवाओं की खास पसंद

मज़बूत भी, खूबसूरत भी।

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE